3

परमेश्वर एक लोग को छुड़ाता है

(निर्गमन 3 व 14)

हम सब ने इस प्रकार अध्ययन किया है, जो हमें लगा कि ''एक और दिन'' होगा। पर फिर बिल्कुल ही अनापेक्षित हो गया। निर्गमन 3 में मूसा के साथ बिल्कुल यही हुआ था। आयत 1 हमें बताती है कि मूसा मिद्यान देश में अपने ससुर की भेड़ें चरा रहा था, जो कि वह गत चालीस वर्ष से चरा रहा था कि कुछ बहुत ही अजीब बात हुई।

मूसा अब्राहम की सन्तान, अर्थात जन्म से इब्रानी था। यह परिवार एक बड़ी जाति बन गया था, जैसा कि परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी, परन्तु वे मिस्र के राजा फिरौन के दास बन गए थे। परमेश्वर के हस्तक्षेप से मूसा को फिरौन के घर में लाया गया था (निर्गमन 2:1-10), परन्तु वह एक मिस्री को इब्रानी गुलाम की पिटाई करने पर उसे मार डालने के बाद मिस्र से भाग गया। स्पष्टतया यह अपने लोगों को छुड़ाने का असफल, अपरिपक्व प्रयास था (प्रेरितों 7:25)। मूसा मिद्यान में चला गया, वहां उसने विवाह कर लिया और उसने यह निष्कर्ष निकाला कि जीवन की उसकी बुलाहट परमेश्वर के लोगों की अगुआई करना नहीं बल्कि भेड़ों की अगुआई करना है।

परन्तु परमेश्वर के मन में कुछ और था। उस यादगार दिन में जब मूसा भेड़ों को चरा रहा था, तो उसने देखा कि एक झाड़ी को आग लगी हुई है, वह आग से जल नहीं रही। यह देखने के लिए कि यह अजब नज़ारा क्या है उसके पास आने पर, यहोवा ने उससे बात की, उसे बताया कि वह पवित्र भूमि पर खड़ा है और अपना परिचय ''अब्राहम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर और याकूब का परमेश्वर'' (3:6) के रूप में कराया। जैसा हम कल्पना कर सकते हैं, इस घटना ने केवल मूसा के दिन को ही नहीं बल्कि उसके पूरे जीवन, यहां तक कि इस्राएली लोगों के जीवनों को भी बदल डाला।

मूसा को बताया गया कि परमेश्वर की एक योजना है कि वह इस्राएलियों को उनकी दासता से छुड़ाकर ''एक अच्छे और बड़े देश'' (कनान) में ले जाए। मूसा को इस प्रक्रिया का आरम्भ फिरौन के पास परमेश्वर का संदेश लेकर जाने से करना था कि ''मेरी प्रजा के लोगों को जाने दो!'' (देखें 5:1; 8:1; 9:1.) मूसा योजना से परेशान हो गया था जिस कारण यह दिखाने के लिए कि इस काम को करने के लिए वह उपयुक्त व्यक्ति नहीं है, उसने कई बहाने बनाए। अन्त में एक अर्थ में यूं कहें कि परमेश्वर ने उसे केवल आदेश दिया कि ''जा!'' हिचकिचाते हुए मूसा चला गया। जैसा कि परमेश्वर ने भविष्यवाणी की थी (4:21), फिरौन का मन कठोर हो गया और उसने उसकी बात सुनने से इनकार कर दिया। परमेश्वर द्वारा मिस्र पर दस विपत्तियां लाने के बाद ही राजा ने अन्त में हार मानकर लोगों को जाने दिया (निर्गमन 7-11)। परन्तु उसके बाद फिरौन ने अपना मन बदल लिया और इस्राएलियों का पीछा करते हुए लाल समुद्र के पास उन तक पहुंच गया। परमेश्वर ने पानी दो भाग करके लोगों को सूखी धरती पर से निकलने दिया।

जब फिरौन उनके पीछे पड़ा रहा तो पानी मिस्रियों के आने पर इकट्ठा हो गया जिससे उनकी सेना नष्ट हो गई। घटनाओं की इस शृंखला को तब से यूनानी शब्द *exodos* से निकले शब्द के रूप में जाना जाता है जिसका अर्थ है ''बाहर निकलना।'' यह शब्द पुराने नियम की उस पुस्तक का शीर्षक है जिसमें ये घटनाएं दर्ज हैं।

निर्गमन इस्राएली इतिहास की सबसे बड़ी घटना थी। इससे इस्राएल के लोगों को एक जाति के रूप में अपनी पहचान मिली। इस सामर्थी काम के द्वारा, परमेश्वर ने उन्हें निकालकर एक जाति में ढालना आरम्भ किया। उस दिन के बाद से वे अपने आपको उन लोगों के रूप में देखने लगे जिन्हें यहोवा ने इस शक्तिशाली काम के द्वारा छुड़ाया था। इस बात में निर्गमन यीशु के क्रूसारोहण और पुनरुत्थान के समान पुराने नियम की घटना है। इन दो घटनाओं से ही मसीही लोग एक लोग के रूप में अपनी पहचान बनाते हैं।

निर्गमन के महत्व का एक और कारण यह है कि इससे इस्राएलियों को अपने परमेश्वर की वास्तविक पहचान बताई गई। दासता के 430 वर्षों के बाद उनका लगभग उससे नाता टूट गया था। वे एक मूर्तिपूजक माहौल में जहां उन्हें अगुआई देने के लिए परमेश्वर का कोई वचन नहीं था, उस परमेश्वर को जिसकी वह आराधना करते थे कोई मन्दिर नहीं था और उन्हें निर्देश देने की कोई याजकाई नहीं थी। लोगों को छुड़ाने के लिए मिस्र में जाने की मूसा की हिचकिचाहट का एक कारण उसकी यह चिन्ता थी कि उन्हें कोई समझ नहीं आएगा कि उसे किसने भेजा है (निर्गमन 3:13)। निर्गमन की घटनाओं से इस्राएल लोगों को अपने परमेश्वर की विशेषताओं का पता चला।

> और यहोवा ने उस दिन इस्राएलियों को मिस्रियों के वंश से इस प्रकार छुड़ाया; और इस्राएलियों ने मिस्रियों को समुद्र के तट पर मरे पड़े हुए देखा और यहोवा ने मिस्रियों पर जो अपना पराक्रम दिखलाया था, उसको देखकर इस्राएलियों ने यहोवा का भय माना और यहोवा की और उसके दास मूसा की भी प्रतीति की (निर्गमन 14:30, 31)।

परमेश्वर जो अपना वचन निभाता है

निर्गमन में इस्राएली लोगों की दासता और छुटकारे की बात पहली नहीं है। वास्तव में जब परमेश्वर ने अब्राहम के साथ वाचा बांधी थी, तो उसने भविष्यवाणी की थी कि घटनाओं की ऐसी शृंखला होगी।

> ... यह निश्चय जान कि तेरे वंश पराए देश में परदेशी होकर रहेंगे, और उसके देश के लोगों के दास हो जाएंगे; और वे उनको चार सौ वर्ष तक दुःख देंगे; फिर जिस देश के वे दास होंगे उसको मैं दण्ड दूंगा: और उसके पश्चा त् वे बड़ा धन वहां से लेकर निकल आएंगे (उत्पत्ति 15:13, 14)।

जितनी पक्की तरह से परमेश्वर नहीं भूला था कि इस्राएल दास बने थे, वह उनके बन्दी बनाने वालों को पराजित करने और उन्हें दासता में से निकालने की प्रतिज्ञा भी नहीं भूला था।

> और यहोवा परमेश्वर ने उस पसली को जो उस ने आदम में से निकाली थी, स्त्री बना दिया; और उसको आदम के पास ले आया। और आदम ने कहा अब यह मेरी हड्डियों में की हड्डी और मेरे मांस में का मांस है: सो इसका नाम नारी होगा, क्योंकि यह नर में से निकाली गई है। इस कारण पुरुष अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा और वे एक तन बनें रहेंगे। और आदम और उसकी पत्नी दोनों नंगे थे, पर लजाते न थे (निर्गमन 2:23-25)।

अपने लोगों के साथ वाचाएं बांधना और उन्हें पूरा करना परमेश्वर का स्वभाव है, जिस कारण एक लेखक ने उसे ''निरन्तरता का परमेश्वर'' कहा।[1] इस्राएल शायद परमेश्वर को भूल गया था पर परमेश्वर इस्राएल को नहीं भूला था। वह उसकी मंशा अब्राहम के साथ की गई अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करना था।

हमारे लिए यह जानना बहुत आवश्यक है कि परमेश्वर अपने वचन को पूरा करता है, यानी वह चिड़चिड़ा या मनमौजी नहीं था। मलाकी 3:6 कहता है, ''क्योंकि मैं यहोवा बदलता नहीं; इसी कारण, हे याकूब की सन्तान तुम नाश नहीं हुए।'' पुराने नियम के अन्त में इस बात का कहा जाना एक महत्वपूर्ण याद दिलाने वाली बात है, क्योंकि आम तौर पर यही माना जाता है कि ''पुराने नियम का परमेश्वर'' ''नये नियम के परमेश्वर'' से अलग है। अपने लिखित वचन के सब भागों में परमेश्वर वही है, सो जो कुछ हम पुराने नियम में से उसके विषय में सीखते हैं वही मसीह की वाचा के अधीन रहने वालों के लिए मान्य है। नया नियम भी हमें बताता है कि ''यीशु मसीह कल और आज और युगानुयुग एक-सा है'' (इब्रानियों 13:8)। इसका अर्थ यह है कि हम इस बात की चिन्ता किए बिना कि जो कुछ उसने पहले कहा वह मान्य है या नहीं, या अच्छा मिज़ाज न होने पर उसे प्रसन्न करने का अवसर नहीं मिलेगा, हम उस पर भरोसा रख सकते हैं। परमेश्वर हमेशा अपनी बात पूरी करता है।

''तो फिर'' कुछ लोग पूछते हैं कि ''परमेश्वर को इस्राएल की ओर से काम करने में चार सौ साल क्यों लग गए? क्या वह अपने वचन को बहुत पहले नही निभा सकता था?'' बेशक वह निभा सकता था, पर उसने ऐसा करना नहीं चुना। परमेश्वर की समयसारिणी और काम करने का उसका विशेषाधिकार है और हमें उसकी समझ पर भरोसा रखना चाहिए। उसके काम करने की प्रतीक्षा करते हुए हम पूरी तरह से आश्वस्त हो सकते हैं कि वह अपना वचन हमेशा पूरा करता है। आज मसीही लोगों का प्रतीक्षा करना पुराने ज़माने के इस्राएल की प्रतीक्षा से अलग नहीं है। यीशु मसीह से पहले मूसा के समय के एक हज़ार साल से अधिक बीत जाने पर, अन्तिम छुटकारा दिलाने वाला सामने आया। यीशु के चेले आज से दो हज़ार वर्ष से उसके वापस आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। परमेश्वर अपनी मर्जी से काम करना क्यों चुनता है, हमें नहीं बताया गया। हमें केवल उस पर भरोसा रखने को कहा गया है।

जब हमें लगता है कि हमें परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के पूरा होने की राह देखते बहुत समय हो गया है तो हम यहोशू 1:5 के शब्दों को याद कर सकते हैं। मूसा के मरने के बाद, परमेश्वर ने प्रतिज्ञा किए हुए देश में इस्राएलियों को ले जाने की ज़िम्मेदारी यहोशू को दी। देश पर विजय पाना एक संघर्ष भरा अभियान होना था। परमेश्वर को मालूम था कि इस विजय में से लोगों को

ले जाना एक कठिन कार्य होगा और मूसा के पद चिह्नों पर चलना किसी तरह जवान व्यक्ति के लिए घबराने वाला होगा। उसने प्रतिज्ञा की, ''तेरे जीवन भर कोई तेरे सामने ठहर न सकेगा; जैसा मैं मूसा के संग रहा वैसे ही तेरे संग रहूंगा, और न तो तुझ को धोखा दूंगा और न तुझे छोडूंगा।''

परमेश्वर की कुछ प्रतिज्ञा जो उसने कहा था कि अब्राहम की सन्तान के लिए करूंगा पूरी होने को थी। उसने अब्राहम के परिवार को एक बड़ी जाति बना दिया था और उसने उन्हें मिस्र की दासता से छुड़ा लिया था। फिर उसने इस्राएलियों को उस देश पर कब्जा करवाना था जिसे देने की प्रतिज्ञा उसने उनके पूर्वज से की थी। परमेश्वर अपना वचन हमेशा निभाता है।

परमेश्वर जो अन्य सभी ईश्वरों से बड़ा है

सदियों बाद मूर्तियों के सामने बलिदान में भेंट किए गए भोजन को खाने या उससे परहेज करने के सवाल पर कुरिन्थुस के मसीही लोगों को लिखते हुए पौलुस ने इस कथन के साथ अपने निर्देषों की भूमिका दी:

> सो मूरतों के साम्हने बलि की हुई वस्तुओं के खाने के विषय में हम जानते हैं, कि मूरत जगत में कोई वस्तु नहीं, और एक को छोड़ और कोई परमेश्वर नहीं। यद्यपि आकाश में और पृथ्वी पर बहुत से ईश्वर कहलाते हैं (जैसा कि बहुत से ईश्वर और बहुत से प्रभु हैं)। तौभी हमारे निकट तो एक ही परमेश्वर है: अर्थात पिता जिस की ओर से सब वस्तुएं हैं, और हम उसी के लिए हैं और एक ही प्रभु है, और हम भी उसी के द्वारा हैं (1 कुरिन्थियों 8:4-6)।

निश्चय ही, सच्चा परमेश्वर केवल एक ही है, पर उपासना किया जाने वाला कुछ भी ''ईश्वर'' ही है; सो मुकाबले में हमेशा से ''देवता'' (''और देवियां'') रहे हैं। प्राचीन लेखों से हमें लगभग चालीस विभिन्न देवताओं के नाम पता चलते हैं, जिनकी मिस्री लोग पूजा करते थे, इससे और अधिक हो सकते हैं। परन्तु इस्राएलियों के मिस्र से निर्गमन ने इस्राएल के परमेश्वर को उन सबसे बड़ा साबित कर दिया।

मूसा अभी परमेश्वर की सेवा से अपने आपको दूर रखने के लिए बहाने बनाने की कोशिश ही कर रहा था कि उसने उससे पूछ लिया: ''जब मैं इस्राएलियों के पास जाकर उन से यह कहूं, कि तुम्हारे पितरों के परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है, तब यदि वे मुझ से पूछें, कि उसका क्या नाम है? तब मैं उनको क्या बताऊं?'' (निर्गमन 3:13)। स्पष्टतया मूसा ने समझ लिया कि इस्राएली लोग परमेश्वर के लिए एक विशेष नाम चाहेंगे जिसकी उन्हें आराधना करनी थी। आखिर मिस्रियों के अलग-अलग देवताओं के नाम थे और इस्राएली अपने परमेश्वर का नाम जानना चाहते थे। यहोवा का उत्तर यह था:

> परमेश्वर ने मूसा से कहा, **मैं जो हूं सो हूं**। फिर उस ने कहा, तू इस्राएलियों से यह कहना, कि जिसका नाम **मैं हूं** है उसी ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है। फिर परमेश्वर ने मूसा से यह भी कहा, कि तू इस्राएलियों से यह कहना, कि तुम्हारे पितरों का परमेश्वर, अर्थात् इब्राहीम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर और याकूब का परमेश्वर, यहोवा उसी ने मुझ को

तुम्हारे पास भेजा है। देख सदा तक मेरा नाम यही रहेगा, और पीढ़ी-पीढ़ी में मेरा स्मरण इसी से हुआ करेगा (निर्गमन 3:14, 15)।

''मैं हूं'' इब्रानी शब्द का लगभग अनुवाद है जिसका अनुवाद ''मैं हूं जो हूं,'' या ''मैं हूंगा जो मैं हूंगा'' भी हो सकता है। इब्रानी शब्द ''YHWH'' (''यहवह'') जिसे आमतौर पर रहस्यमय संकेत वाला ''चतुवर्णी शब्द'' कहा जाता है। सभी प्राचीन इब्रानी शब्दों की तरह मूलतया इसे भी बिना स्वरों के लिखा जाता था। इसका अर्थ यह है कि हमारे लिए यह जानना असम्भव है कि इसका सही-सही कैसे उच्चारण किया जाता था। ''याहवेह'' एक अच्छा अनुमान है। कई बार इसे ''जाहवेह'' बोला जाता है पर उच्चारण वही है।[2]

''YHWH'' का क्या अर्थ है? परमेश्वर ने अपना नाम एक क्रिया वाला क्यों रखा? सम्भावनाएं तो बहुत हैं पर यह लगता है कि इस शब्द का अर्थ कुछ ऐसा है ''परमेश्वर जो सचमुच में परमेश्वर है, जो है और जो सदा से है।'' यह इस बात का संकेत देता है कि परमेश्वर स्वयं प्रामाणिकता दे रहा है और स्वयं स्थिर है। इससे उसके और मिस्रियों के देवताओं (अन्य सभी मूर्तियों) में सीधे अन्तर की ओर ध्यान दिलाया गया है। मूर्तियां उन्हें बनाने वालों, उठाकर ले जाने, उनकी ओर से बात करने और उनकी देखभाल करने के लिए अपने आराधकों पर निर्भर रहती हैं। (यशायाह 44:9-20 में मूर्तिपूजा की मूर्खता की यशायाह की कटु समीक्षा पढ़ें।) परमेश्वर जो इस्राएल का है, ही एक सच्चा और जीवित परमेश्वर है। उसकी सृष्टि की अपने अस्तित्व, मरम्मत और सम्भाल पर निर्भर है। परमेश्वर अपने आपको एकमात्र परमेश्वर घोषित कर रहा था। जो नाम इस नाम के योग्य भी है।

फिरौन की कठोरता के कारण मिस्र के विरुद्ध परमेश्वर की दस आपदाएं मिस्र के विभिन्न देवताओं पर परमेश्वर की सामर्थ को दिखाने के लिए बनाई गई थीं। नील नदी को भी देवता का दर्जा मिला हुआ था, क्योंकि यह हर साल अपने किनारों से ऊंची उठकर मिस्रियों के लिए जीवनदायक नमी लाकर उनके खेतों को उपजाऊ बनाती है। नदी के किनारे कीचड़ में से मेढक आमतौर पर दिखाई देते थे, जिससे मिस्रियों ने यह निष्कर्ष निकाला था कि वे ईश्वरीय प्रदर्शन, जैसे सड़ रहे तत्व से रहस्यपूर्ण ढंग से मक्खियां दिखाई देती थीं। फिरौन को भी देवता माना जाता था और लोग उसकी पूजा करते थे। इसलिए आपदाओं से मिस्र को झुकाने के समय वे केवल ''प्राकृतिक आपदाओं'' की शृंखला नहीं बल्कि वास्तव में मिस्र में पूजे जाने वाले झूठे देवताओं का न्याय था।

जब मूसा पहली बार फिरौन से मिलने और उससे यह कहने के लिए गया कि इस्राएल को जाने दे तो फिरौन ने बड़े घमण्ड से उत्तर दिया था, ''यहोवा कौन है, कि मैं उसका वचन मानकर इस्राएलियों को जाने दूं? मैं यहोवा को नहीं जानता, और मैं इस्राएलियों को नहीं जाने दूंगा'' (निर्गमन 5:2)। विपत्तियां खत्म होने तक फिरौन और सारे मिस्र को पता चल चुका था कि सचमुच में परमेश्वर कौन है अर्थात अन्य सभी ''देवताओं'' के ऊपर श्रेष्ठ कौन है, और वह कौन है जिसके सामने फिरौन को भी झुकना है। फिरौन के पहलौठे पुत्र की मृत्यु से यह तथ्य स्पष्ट हो गया।

यहोवाह के मूसा को यह कहने पर, ''तू इस्राएलियों से यह कहना कि जिसका नाम **मैं हूं** है

उसी ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है'' (देखें 3:14)। वह उन्हें एक सच्चे परमेश्वर पर विश्वास करने और अन्य सभी ''देवताओं'' के दावों पर नकाराने को कह रहा था जो वास्तव में ''जो ईश्वर नहीं है'' (देखें 2 इतिहास 13:9; प्रेरितों 19:26; गलातियों 4:8)। हमारे अपने संसार में मुकाबला कर रहे ''देवता'' इतने हैं (जैसे धन, सुख, तकनीक, सैनिक और राजनैतिक शक्ति) इस कारण हमें भी वैसा ही करने को कहा जाता है। आज भी केवल एक ही परमेश्वर है जिसने अपने लोगों को छुड़ाने के लिए काम किया है और जो पाप की हमारी समस्या का समाधान देता है।

परमेश्वर जो पवित्र है

मूसा के जलती हुई झाड़ी के पास पहुंचने पर परमेश्वर ने बुलाया और कहा, ''उस ने कहा इधर पास मत आ, और अपने पांवों से जूतियों को उतार दे, क्योंकि जिस स्थान पर तू खड़ा है वह पवित्र भूमि है'' (निर्गमन 3:5)। परमेश्वर की उपस्थिति के कारण वह भूमि भी जहां मूसा खड़ा था, पवित्र थी। परमेश्वर की ''पवित्रता'' की बात करने का अर्थ उसकी ''भिन्नता'' की बात करना है। वह अपने आप में एक श्रेणी है यानी वह हमारे जैसा नहीं है और हम उसके पास केवल उसके निमन्त्रण से और उसके बताए ढंग से ही जा सकते हैं। उनकी लम्बी दासता और अपने परमेश्वर से अलगाव के बाद इस्राएलियों को परमेश्वर को गम्भीरता से लेना सीखना था। उन्हें उसकी इच्छा को ढूंढ़ना और उसके पास केवल बताए ढंग से बताना आवश्यक है।

निर्गमन के अन्तिम पन्द्रह अध्याय पवित्रता पर ही हैं। इन अध्यायों में परमेश्वर ने मूसा को तम्बू (आराधना के लिए एक वहनीय भवन), वहां चढ़ाए जाने वाले बलिदान तम्बू बनाने और वहां चढ़ाए जाने वाले बलिदानों, याजकाई (याजकों के वस्त्र सहित) तम्बू के लिए सामान के सम्बन्धी निर्देश दिए। परमेश्वर की आराधना से जुड़ी सभी चीज़ों की सामग्री की भी वाचा के सन्दूक को ले जाने वाले व्यक्ति तथा उसके ढंग सहित खोलकर समझाई गई थी। वे सब बातें जो हमारे लिए ''अनावश्यक विवरण'' लग सकती हैं इस्राएल के लिए परमेश्वर के स्वभाव को समझने के लिए महत्वपूर्ण थीं। इन विवरणों से बताया गया कि परमेश्वर के पास भय के साथ आना आवश्यक है।

भय और भक्ति लोगों के मन में आता है कि ''हम पुरानी वाचा के अधीन नहीं रहते'' इस कारण हमें पवित्रता की बातों जैसे आराधना में परमेश्वर के पास हमारा भक्तिपूर्ण ढंग से आना पर इतना ध्यान देने की आवश्यकता नहीं। यह एक अजीब अवधारणा है क्योंकि पवित्र शास्त्र में कोई बात हमें इस विश्वास तक नहीं लाते। मसीह के क्रूस से परमेश्वर के पवित्र स्वभाव नहीं बदल गया। बल्कि परमेश्वर की पवित्रता *के कारण* क्रूस आवश्यक था। पाप के लिए प्रायश्चित किया जाना आवश्यक था। क्योंकि इसे यूं ही अनदेखा नहीं किया जा सकता। बेशक हम प्राचीन इस्राएल वाले आराधना के ढंगों का अनुसरण नहीं करते, पर आराधना में हमारा व्यवहार वैसा ही होना चाहिए।

निर्गमन की पुस्तक का विवरण यह भी दिखाता है कि वह पवित्र है, इस कारण हम बिना विनाश को अपने ऊपर लिए परमेश्वर को चुनौती नहीं दे सकते। अपनी पहली मुलाकात में फिरौन ने मूसा से एक खारिज करने वाला प्रश्न किया: ''यहोवा कौन है कि मैं उसका वचन मानकर इस्राएलियों को जाने दूं?'' (निर्गमन 5:2)। वास्तव में निर्गमन की पूरी घटना और

निर्गमन की पुस्तक में यही मुख्य प्रश्न है कि वास्तव में यहोवा कौन है? फिरौन को कठिन ढंग पता चला क्योंकि उसने ''अपने मन को कठोर करके'' परमेश्वर को खारिज किया था (देखें निर्गमन 8:15, 32)। परमेश्वर ने इसी जवाब की भविष्यवाणी की थी जब फिरौन ने अन्तिम बार अपने मन को कठोर किया और इस्राएली समुद्र की ओर जाने को तैयार थे, तो परमेश्वर ने मूसा से कहा:

> मैं आप मिस्रियों के मन को कठोर करता हूं, और वे उनका पीछा करके समुद्र में घुस पड़ेंगे, तब फिरौन और उसकी सेना, और रथों, और सवारों के द्वारा मेरी महिमा होगी, तब मिस्री जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं। और जब फिरौन, और उसके रथों, और सवारों के द्वारा मेरी महिमा होगी, तब मिस्री जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं (निर्गमन 14:17, 18)।

मिस्रियों को यह महत्वपूर्ण सबक कि परमेश्वर ही परमेश्वर है उसके न्याय की शक्ति को देखकर समझ आया। परमेश्वर नहीं चाहता था कि इस्राएली दण्ड के द्वारा सीखने की वही गलती करें। सो उसने अपनी पवित्रता की पर्याप्त चेतावनी और निर्देश उन्हें दिया। वह नये नियम के पृष्ठों के द्वारा कलीसिया को भी वही चेतावनी और निर्देश देता है। मसीही लोगों से परमेश्वर की पवित्रता का सम्मान करने और अपने जीवनों और आचरण से पाप से दूर रहकर उस पवित्रता को दिखाने का आग्रह किया जाता है। (उदाहरण के लिए देखें मत्ती 2 कुरिन्थियों 7:1; इब्रानियों 10:26–31; 12:25–29; 1 पतरस 1:15.)

परमेश्वर जो बुलाता और अपने लोगों को सामर्थ देता है

परमेश्वर ने मूसा को इस्राएल का छुड़ाने वाला बनने के लिए बुलाया तो उसने उसे केवल काम ही नहीं बल्कि उस काम को करने की योग्यता भी दी। जब मूसा ने आपत्ति की कि जब वह लोगों के पास जाएगा तो वह उसे नहीं मानेंगे, तो परमेश्वर ने उसे प्रमाण के रूप में इस्तेमाल के लिए चिह्न दिया: छड़ी जो सांप बन गई, उसके हाथ में कोढ़ी बनाने और फिर उसे शुद्ध बनाने की योग्यता और पानी को लहू में बदल देने की सामर्थ (4:1–9)। और विनती करने पर कि वह परमेश्वर का प्रवक्ता बनने के लिए बोलने में तेज़ नहीं है, परमेश्वर ने उसे याद दिलाया कि मनुष्य का मुंह उसी ने बनाया है और निश्चय ही वह जिसे चाहे उसे बोलने में तेज़ बना सकता है। इसके अलावा उसने मूसा के भाई हारून को उसका ''मुखौटा'' बनाकर भेजा (4:10–17)।

बाद में जब इस्राएली समुद्र में अपने मिस्री रथों की बड़ी सेना से बचने में असमर्थ थे तो परमेश्वर ने बचाव का एक शानदार ढंग दिया। फिर उसने इतनी बड़ी भीड़ जंगल में उनके चालीस वर्षों के उजाड़ जंगल में जीवित रहना सम्भव बनाया।

परमेश्वर आज भी अपने लोगों को बुला रहा और उन्हें सामर्थ दे रहा है। यीशु मसीह के द्वारा वह कलीसिया को पवित्र लोग बनने के लिए बुलाता है जिन्हें यीशु की कहानी पूरे संसार में बताना और परमेश्वर के प्रेम और करुणा को बांटना आवश्यक है। यह काम आम तौर पर कठिन होता है, पर परमेश्वर हमें उस काम को पूरा करने के लिए हर आवश्यक चीज़ उपलब्ध कराता है। कलीसिया का आरम्भ पवित्र आत्मा के दिए जाने के साथ इसी लिए हुआ। जब तक परमेश्वर ने सामर्थ नहीं दी तब तक प्रेरित भी लाचार थे। आत्मा के आने पर सब कुछ बदल गया। वही

आत्मा आज मसीह में विश्वास करने वाले बपतिस्मा पाए हुए सभी लोगों में सेवा के लिए उन्हें सामर्थ देने के लिए वास करता है (प्रेरितों 2:1-38)। हमें प्रभु की सेवा करने से अपने आपको दूर रखने के लिए कभी बहाना बनाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। वह हमें जो कुछ भी करने के लिए बुलाता है, उससे करने के योग्य भी बनाता है।

सारांश

मूसा और इस्राएलियों की चुनौती उस परमेश्वर में विश्वास करना और भरोसा रखना है जो उन्हें दासता में से अपनी अद्‌भुत स्वतन्त्रता में बुला रहा है। वह यह वह परमेश्वर है जो अपने वचन को पूरा करता है, जो अन्य सभी ''देवताओं'' से बड़ा है, जो पूर्णतया पवित्र है और जो अपने लोगों को सेवा के लिए बुलाता और सामर्थ देता है। जिस प्रकार से परमेश्वर आज भी वही है, वैसे ही उसमें विश्वास करना और उसकी बात मानने की चुनौती है।

णियां

[1]पॉल आर. हाउस, *ओल्ड टैस्टामेंट थियोलॉजी* (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटर-वर्सिटी, 1998), 92. [2]''यहोवाह'' नाम जर्मन आविष्कार है जो ''प्रभु'' (*'Adonay*) के लिए शब्द से लिए गए स्वरों के साथ ''यहवह'' को मिलाता है।

फिरौन के मन का कठोर होना

बाइबल के पाठक आम तौर पर निर्गमन में इन बातों से परेशान होते हैं कि परमेश्वर ने ''फिरौन के मन को कठोर किया'' और यह कि उसने विशेष रूप में इस कठोर होने की भविष्यवाणी की। सामान्य पाठ के लिए ऐसा लग सकता है कि जैसे फिरौन को परमेश्वर द्वारा जान-बूझकर उसे खारिज करने के लिए ''ठहराया'' था। ताकि परमेश्वर उस पर अपनी सामर्थ को दिखा सके। (देखें निर्गमन 4:21.) कोई भी परमेश्वर का सामना नहीं कर सकता, तो फिर फिरौन को यह अवसर कैसे मिला? यह तो ऐसा लगता है जैसे परमेश्वर ने ही उससे आज्ञा तुड़वाई हो और फिर उससे ऐसा करने के लिए दण्ड दे दिया। (फिरौन के कठोर होने में परमेश्वर की भूमिका के हवालों के लिए देखें निर्गमन 9:12; 10:20, 27; 11:10. अन्य वचन केवल इतना कहते हैं, ''फिरौन का मन कठोर हो गया,'' जिनमें यह नहीं बताया गया कि इसका जिम्मेदार कौन था [7:13, 22; 8:19; देखें 9:7]।)

वचन यह भी कहता है कि फिरौन ने अपना मन स्वयं कठोर किया; अन्य शब्दों में पूरी प्रक्रिया में वह केवल लाचार बंधक नहीं था (निर्गमन 8:15, 32; 9:34; 14:5)। आरम्भ से ही फिरौन यहोवा के प्रति अक्खड़, आज्ञा न मानने वाला व्यवहार रखता था। परमेश्वर को अच्छी तरह से मालूम था कि वह किस प्रकार के व्यक्ति से व्यवहार कर रहा है और उसने फिरौन की कठोरता को न केवल मिस्रियों बल्कि इस्राएलियों को भी अपनी पवित्रता का सबक सिखाने के लिए इस्तेमाल किया।

परमेश्वर के ''कठोर करने'' को हम कह सकते हैं कि यह भेड़ों को गधे बनाना नहीं है;

यह केवल इतना सुनिश्चित करता है कि गधे ईश्वरीय संकेत को लात मारते हैं। परिणाम यह होता है कि संकेत को लात मारना जानवर की इच्छा या संकेत देने वाले की समझ जितना ही हो सकता है और फिरौन अपने कठोर मन के पाप के लिए जिम्मेदार रहता है (निर्गमन 9:34)।[1]

टिप्पणी

[1]स्टीफन वेस्टनहोम, *प्रीफेस टू द स्टडी ऑफ़ पॉल* (ग्रैंड रैपिडस, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1997), 105, एन. 13.